अंक 01 / जनवरी–मार्च 2025

nafed
A Farmers' Cooperative
...Since 1958

International Year of Cooperatives 2025
Cooperatives Build a Better World

नेफेड समाचार

त्रैमासिक पत्रिका

सशक्त कृषि और सहकारिता

खंड-1

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के उपलक्ष में उत्सव

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष (IYC 2025) घोषित किया है, जिसकी थीम है – "सहकारिताएं एक बेहतर विश्व का निर्माण करती हैं।" 25 नवंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित ग्लोबल कोऑपरेटिव कॉन्फ्रेंस 2024 के उद्घाटन समारोह के दौरान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आधिकारिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के उत्सव की शुरुआत की और विश्व सहकारी आंदोलन एवं उसके प्रभाव को सम्मान देने हेतु एक स्मारक डाक टिकट का विमोचन किया।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने बताया कि गत तीन वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सहकारी क्षेत्र ने अभूतपूर्व प्रगति की है। उन्होंने कहा कि सहकारी आंदोलन ने गांवों, किसानों, महिलाओं और वंचित वर्गों को सशक्त बनाने के अनगिनत अवसर प्रदान किए हैं।

श्री अमित शाह ने दोहराया कि प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत "सहकार से समृद्धि" का विज़न अब साकार हो रहा है। उन्होंने आगे कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर सिद्ध होगा, जो विश्वभर में करोड़ों गरीबों, किसानों और महिलाओं को सशक्त बनाएगा और उन्हें आत्मनिर्भरता और गरिमा के साथ जीवन जीने में सहायता करेगा।

आईवाईसी 2025 को बढ़ावा देने में नेफेड की भूमिका

नेफेड गतिशील पहलों के माध्यम से आईवाईसी 2025 को आगे बढ़ा रहा है, आधिकारिक संचार में आईवाईसी लोगो को एकीकृत कर रहा है और सहकारिता मंत्रालय के साथ कार्यक्रमों में भाग ले रहा है। सहकारी समितियों को सशक्त बनाने के लिए, नेफेड बाजार फ्रेंचाइजी का विस्तार करेगा, क्विज़, वाद-विवाद, खेल प्रतियोगिताएँ और सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों पर वेबिनार आयोजित करेगा।

मुख्य आकर्षणों में राष्ट्रीय वाद-विवाद, पैनल चर्चाएं और क्षमता निर्माण कार्यक्रम शामिल हैं। नेफेड 500 बाजार फ्रेंचाइज़ी लॉन्च करने, पौधारोपण अभियान चलाने और सहकारी उत्पादों को सोशल व मुख्यधारा मीडिया के माध्यम से प्रचारित करने की योजना बना रहा है। इन प्रयासों का उद्देश्य सहकारी आंदोलन को व्यापक बनाना और "सहकार से समृद्धि" के विजन को आगे बढ़ाना है।

भारत ब्रांड उत्पादों के चरण-2 का शुभारंभ

खुली बाजार बिक्री योजना (OMSS) के अंतर्गत भारत ब्रांड उत्पादों का चरण-1 जून 2024 तक सफलतापूर्वक लागू किया गया, जिसमें नेफेड मोबाइल वैनों और संगठित रिटेल चैनलों के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों को किफायती दरों पर उपलब्ध कराया गया। भारत ब्रांड उत्पादों का चरण-2 जुलाई 2024 से प्रारंभ हो चुका है और पूरे भारत में नेफेड मोबाइल वैनों के माध्यम से यह उत्पाद उचित दरों पर वितरित किए जा रहे हैं। भारत ब्रांड उत्पादों की श्रृंखला में कुल सात उत्पाद शामिल हैं। मसूर दाल ₹89 प्रति किलोग्राम, चना साबुत ₹58 प्रति किलोग्राम, भारत चावल ₹34 प्रति किलोग्राम, भारत आटा ₹30 प्रति

किलोग्राम, मूंग साबुत ₹93 प्रति किलोग्राम, मूंग धुली ₹107 प्रति किलोग्राम और भारत चना दाल ₹70 प्रति किलोग्राम पर उपलब्ध है। 23 फरवरी 2025 तक, नेफेड ने पूरे भारत में भारत ब्रांड उत्पादों के कुल 121163.42 मीट्रिक टन की बिक्री की है।

कर्तव्य पथ पर नेफेड बाजार का शुभारंभ

31 जनवरी 2025 को नई दिल्ली स्थित कर्तव्य पथ पर नये नेफेड बाजार स्टोर का वर्चुअल उद्घाटन माननीय अध्यक्ष नेफेड श्री जेठाभाई आहिर एवं माननीय प्रबंध निदेशक नेफेड श्री दीपक अग्रवाल, आईएएस द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। यह स्टोर उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें प्रतिस्पर्धी मूल्य पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला प्रदान करेगा, साथ ही किसानों और उत्पादकों को भी सशक्त बनाएगा।

SIAL 2024 में नेफेड की भागीदारी

नेफेड ने 5 से 7 दिसंबर 2024 तक द्वारका, नई दिल्ली स्थित यशोभूमि, IICC के हॉल नं. 1C में आयोजित SIAL इंडिया में भाग लिया। नेफेड के स्टॉल पर विभिन्न उत्पादों का प्रदर्शन किया गया, जिसमें टी कार्ट पर नेफेड चाय के प्रामाणिक स्वाद ने विशेष ध्यान आकर्षित किया। माननीय प्रबंध निदेशक नेफेड, श्री दीपक अग्रवाल, आईएएस ने स्टॉल का दौरा किया, टीम के साथ संवाद किया और गुणवत्ता व उपभोक्ता संतुष्टि के प्रति नेफेड की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

BHARAT BRAND PRODUCTS
nafed
A Farmers' Cooperative
...Since 1958
PRODUCTS
AVAILABLE
AT
Nafed Bazaar
nafed TEA

GROWN IN IND
FOR THE WOR
nafed

nafed
A Farmers' Cooperative
...Since 1958
Chai on
Thakaan Gone
चाय ऑन
nafed TEA

मिलेट कुकी और कोको क्रिसमस पार्टी, मिलेट्स एक्सपीरियंस सेंटर में

22 दिसंबर 2024 को नई दिल्ली के आईएनए स्थित नेफेड मिलेट्स एक्सपीरियंस सेंटर में मिलेट कुकी और कोको क्रिसमस बेकिंग पार्टी का आयोजन हुआ। इस आयोजन में बच्चों ने मिलेट आधारित स्वादिष्ट व्यंजन बनाकर आनंद लिया, जिससे यह अवसर खुशियों और सेहतमंद स्वाद से भरपूर बन गया।

इंडस फूड 2025 में नेफेड की सहभागिता

नेफेड ने 8 से 10 जनवरी 2025 तक ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो सेंटर में आयोजित इंडस फूड 2025 में भारत के उत्कृष्ट कृषि उत्पादों का प्रदर्शन किया। माननीय प्रबंध निदेशक नेफेड, श्री दीपक अग्रवाल, आईएएस ने स्टॉल का दौरा किया और टीम से बातचीत की, जिससे भारत की कृषि उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के प्रति नेफेड की प्रतिबद्धता को बल मिला। इस आयोजन में नेफेड के उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उत्पादों, भारत के एग्री-बिजनेस

क्षेत्र में उसके योगदान तथा चाय और चावल के निर्यात में नए अवसरों की संभावनाओं को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया।

महाकुंभ 2025 में नेफेड मंडप और मोबाइल वैन

माननीय अध्यक्ष नेफेड श्री जेठाभाई आहिर एवं माननीय प्रबंध निदेशक नेफेड श्री दीपक अग्रवाल, आईएएस द्वारा 31 जनवरी 2025 को एक वर्चुअल समारोह के माध्यम से प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के अवसर पर नेफेड मंडप का उद्‌घाटन किया गया। यह मंडप श्रद्धालुओं को भारत ब्रांड उत्पादों एवं नेफेड की प्रीमियम श्रेणी के उत्पादों — जिनमें दालें, चाय, सूखे मेवे आदि शामिल हैं — की सुविधा प्रदान करेगा। साथ ही, नेफेड अपने उत्पादों की बिक्री के लिए मोबाइल वैन के माध्यम से सेवा प्रदान कर रहा है, जिससे महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं तक इन उत्पादों की आसान पहुंच सुनिश्चित की जा सके।

गल्फूड 2025 में नेफेड की सहभागिता

नेफेड ने 17 से 21 फरवरी 2025 तक दुबई स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में आयोजित गल्फूड 2025 में भाग लिया। इस आयोजन में नेफेड की प्रीमियम श्रेणी के चावल, चाय और दालों का प्रदर्शन किया गया, जो भारत की समृद्ध कृषि विरासत और गुणवत्ता आधारित निर्यात प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गल्फूड 2025 में नेफेड और लुलु ग्रुप के बीच समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर

गल्फूड 2025 के दौरान दुबई के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में नेफेड और लुलु ग्रुप, दुबई के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। इस सहयोग के तहत अब नेफेड उत्पाद लुलु ग्रुप के वैश्विक रिटेल स्टोर्स में उपलब्ध होंगे, जबकि भारत ब्रांड उत्पाद लुलु के भारत स्थित रिटेल स्टोर्स में उपभोक्ताओं को सुलभ होंगे।

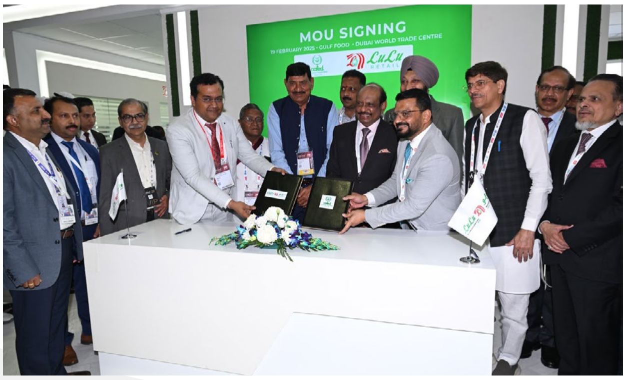

लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम, आईआईएम अहमदाबाद

श्री अनुराग तिवारी, महाप्रबंधक (लीगल) ने 29 अप्रैल से 1 मई 2024 तक आईआईएम, अहमदाबाद द्वारा मुख्य विधि अधिकारियों (CLOs) के लिए आयोजित तीन दिवसीय लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य CLOs की सोच में बदलाव लाना, नेतृत्व कौशल विकसित करना, बड़ी टीमों का प्रबंधन करना और कंपनी के अंत:करण संरक्षक की भूमिका को समझना था। यह कार्यक्रम CLOs को प्रमुख व्यावसायिक सक्षमता प्रदाताओं के रूप में स्थापित करने की दिशा में केंद्रित रहा।

जनरल मैनेजमेंट प्रोग्राम, एएससीआई, हैदराबाद

श्री सुधीर कुमार सिंह, प्रबंधक, श्री रंजीय कुमार, प्रबंधक, श्री मनोज कुमार मिश्रा, उप प्रबंधक, सुश्री सुरभि राजपूत, सहायक प्रबंधक, सुश्री अरुंधति दत्ता, सहायक प्रबंधक, श्री भगवान मुर्मू, सहायक प्रबंधक, श्री वीरप्पा नागासाई मनोज, सहायक प्रबंधक-द्वितीय, श्री नरेश शर्मा, सहायक प्रबंधक-द्वितीय (लेखा) ने 20 से 24 जनवरी 2025 तक प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया (ASCI), हैदराबाद द्वारा नेफेड के अधिकारियों के लिए आयोजित पांच दिवसीय जनरल मैनेजमेंट प्रोग्राम में भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य संवादात्मक सत्रों के माध्यम से नेफेड कर्मचारियों के प्रबंधकीय और सामाजिक कौशल को सुदृढ़ करना था, जिसमें विपणन, वित्त, नेतृत्व, निर्णय-निर्माण, वैश्विक व्यापार, कृषि क्षेत्र की चुनौतियाँ, सहकारी बैंकिंग, ई-बिजनेस, नवाचार प्रबंधन और रणनीतिक योजना जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया।

अध्ययन दौरा सत्र

नेफेड समय-समय पर कृषि विश्वविद्यालयों के छात्रों तथा विपणन सहकारी समितियों के अध्यक्षों और निदेशकों के लिए अध्ययन दौरा सत्र आयोजित करता है। ये अध्ययन

दौरे एक शैक्षणिक एवं अनुभववर्धक पहल के रूप में कार्य करते हैं, जिससे प्रतिभागियों को कृषि विपणन

प्रथाओं, सहकारी प्रबंधन, आपूर्ति श्रृंखला प्रक्रियाओं तथा आधुनिक कृषि व्यापार तकनीकों की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त होती है।

रबी 2024-25 के दौरान प्रमाणित बीज मिनी किट का वितरण

नेफेड, जो कि भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की एक केंद्रीय बीज एजेंसी है, भारत सरकार की एनएफएसएम (NFSM) योजना के अंतर्गत तिलहन एवं दलहन की प्रमाणित बीज मिनी किटों (8 किलो प्रत्येक) की आपूर्ति करता है। रबी 2024-25 के दौरान, नेफेड ने कुल 4,08,961 मसूर बीज मिनी किटों की आपूर्ति की, जिनका वितरण छत्तीसगढ़ (8125 किट), मध्य प्रदेश (192690 किट), उत्तर प्रदेश (138499 किट), राजस्थान (9375 किट), उत्तराखंड (12519 किट), महाराष्ट्र (4375 किट), पश्चिम बंगाल (14760 किट), बिहार (28616 किट), और हरियाणा (4000 किट) राज्यों में एनएफएसएम-दलहन योजना के अंतर्गत किया गया। इस वितरण की कुल अनुमानित लागत ₹35.33 करोड़ रही।

सब्जी बीज / अन्य हाइब्रिड / टी.एल. बीज आपूर्ति

नेफेड ने अप्रैल 2024 से जनवरी 2025 तक जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों को एमआईडीएच, आरकेवीवाई और डीएमएफ जैसी केंद्रीय एवं राज्य योजनाओं के अंतर्गत ओपन पोलिनेटेड (OP), ट्रुथफुली लेबल्ड (TL) और हाइब्रिड सहित विभिन्न प्रकार के सब्जी बीजों की बिक्री की। इस अवधि में नेफेड ने लगभग ₹63.86 लाख की सब्जी बीज बिक्री से राजस्व प्राप्त किया।

बीज व्यवसाय का कुल टर्नओवर अप्रैल 2024 से जनवरी 2025 के दौरान ₹5969.93 लाख रहा, जिसमें से ₹406.17 लाख (अनुमानित) का सकल लाभ अर्जित किया गया। बीज उत्पादन सब्सिडी दावा से अर्जित लाभ ₹2181.21 लाख रहा।

नेफेड बायोफर्टिलाइजर और बायो-एग्री इनपुट

अप्रैल 2024 से जनवरी 2025 के लिए नेफेड बायोफर्टिलाइजर का अनुमानित टर्नओवर ₹32.87 लाख रहा, जिसमें लगभग ₹21.11 लाख का सकल लाभ प्राप्त हुआ।

अप्रैल 2024 से जनवरी 2025 के लिए बैक-टू-बैक बायो-

एग्री इनपुट व्यवसाय का अनुमानित टर्नओवर ₹2.33 करोड़ है, जिसमें लगभग ₹11.13 लाख का सकल लाभ अर्जित किया गया।

नए लॉन्च किए गए नेफेड उत्पाद

नेफेड ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विशेषता वाले नए उत्पादों की एक नई श्रृंखला लॉन्च की है, जो किसानों का समर्थन करती है और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देती है। इस पहल ने न केवल उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता वाले पारंपरिक खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराए हैं, बल्कि हजारों किसानों को आत्मनिर्भर बनने में भी मदद की है।

नई रूप से प्रस्तुत किए गए उत्पादों में शामिल हैं:

1. **शुद्ध शहद:** सहारनपुर के साफ-सुथरे प्राकृतिक वातावरण से प्राप्त यह प्राकृतिक शहद रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, भोजन के पोषण मूल्य को बढ़ाता है और आपके भोजन में मिठास का स्वाद जोड़ता है।
2. **गुड़:** मुजफ्फरनगर की बेहतरीन गन्ने से बना यह रासायनिक-मुक्त गुड़ आयरन और खनिजों से भरपूर है, जो पाचन में सहायता करता है और प्राकृतिक ऊर्जा प्रदान करता है।
3. **मखाना (फॉक्सनट्स):** बिहार के तालाबों में उगाया गया मखाना एक हल्का, कुरकुरा स्नैक है, जो प्रोटीन और फाइबर से भरपूर है, जिससे यह सभी उम्र के लिए एक स्वस्थ विकल्प बनता है।
4. **सरसों कसुंदी:** गुजरात के विशेष सरसों के बीजों से बनी कासुंडी सरसों, व्यंजनों में तीखा और मसालेदार स्वाद जोड़ती है और साथ ही स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करती है।

नेफेड के मिलेट आधारित उत्पाद

अंतर्राष्ट्रीय सहकारी वर्ष 2025 के भाग के रूप में, नेफेड ने बाजरे आधारित उत्पादों की एक श्रृंखला पेश की है, जो छोटे किसानों का समर्थन करती है और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देती है। ये पोषक तत्वों से भरपूर उत्पाद साप्तुरा क्षेत्र की सुरम्य भूमि में किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) और स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के सहयोग से उगाए गए हैं, जो रोजमर्रा के भोजन में एक स्वस्थ विकल्प प्रदान करते हैं।

नई लॉन्च की गई बाजरे आधारित उत्पादों में शामिल हैं:

- इंस्टेंट मल्टी मिलेट इडली मिक्स – एक हल्का, पौष्टिक और आसानी से पचने वाला नाश्ते का विकल्प।
- मिलेट डोसा मिक्स – पारंपरिक डोसे का कुरकुरा और स्वादिष्ट विकल्प, जो किसी भी भोजन के लिए उपयुक्त है।
- मिलेट हक्का नूडल्स – नियमित नूडल्स का एक स्वस्थ और हल्का विकल्प, जिसमें बाजरे का पोषण समाहित है।
- मिलेट पास्ता – पौष्टिक बाजरे से बना एक संपूर्ण और guilt-free विकल्प, पास्ता प्रेमियों के लिए।
- ज्वार ड्राई फ्रूट कुकीज – ज्वार और सूखे मेवों से बना कुरकुरा और स्वादिष्ट स्नैक।

नेफेड की सोशल मीडिया के माध्यम से पहुँच

आज के डिजिटल युग में, सोशल मीडिया केवल एक प्लेटफॉर्म नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली साधन है जो नेफेड को लाखों लोगों से जोड़ता है, जागरूकता फैलाता है और भारत की कृषि शक्ति को प्रदर्शित करता है। यह वास्तविक समय में संवाद की सुविधा प्रदान करता है, जिससे किसान, हितधारक और उपभोक्ता प्रमुख घटनाक्रमों से हमेशा अपडेट रहते हैं। मासिक ब्लॉग के माध्यम से नेफेड कृषि, बाजार और पहलों की गहराई से जानकारी प्रदान करता है, जबकि आकर्षक रील्स और छोटे वीडियो प्रमुख प्रयासों और सफलताओं की झलकियां प्रस्तुत करते हैं। दैनिक अपडेट्स में कार्यक्रम, किसानों से संवाद और फील्ड गतिविधियां शामिल होती हैं, जिससे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर नेफेड का प्रभाव स्पष्ट और महसूस किया जा सकता है।

केवल अपडेट साझा करने तक सीमित न रहकर, सोशल मीडिया विश्वास निर्माण, संबंधों को मजबूत करने और किसानों को सशक्त बनाने में मदद करता है। यह नेफेड को सुनने, संवाद करने और वास्तविक समय में मुद्दों को समझकर हल करने का अवसर देता है। पारदर्शिता और बाजार की जानकारी को बढ़ावा देकर यह किसानों को सूचित निर्णय लेने में सहायता करता है। साथ ही यह किसानों और उपभोक्ताओं के बीच एक सेतु का काम करता है, जो वैश्विक स्तर पर भारत की कृषि संभावनाओं को मजबूती देता है। हर पोस्ट, वीडियो और संवाद के साथ, सोशल मीडिया हमारे जुड़ने, विकास करने और भारतीय कृषि के भविष्य को आकार देने के तरीके को बदल रहा है।

खंड-2

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय: युवाओं और सहकारी आंदोलन के लिए स्वर्णिम भविष्य

- दिलीप संघाणी, अध्यक्ष NCUI, IFFCO & GUJCOMASOL, पूर्व मंत्री, गुजरात

भारत में सहकारी आंदोलन को नई दिशा देने और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित करने के उद्देश्य से सरकार ने 'त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय' (Tribhuvan Cooperative University) की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। अब यह सपना साकार हो चुका है, क्योंकि त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक (Tribhuvan Cooperative University Bill) को लोकसभा और राज्यसभा दोनों ने पारित कर दिया है। इस विधेयक के पारित होने के साथ ही, यह विश्वविद्यालय न केवल सहकारी शिक्षा, अनुसंधान और प्रशिक्षण को बढ़ावा देगा, बल्कि सहकारी क्षेत्र को अधिक पेशेवर और प्रभावी बनाने में भी मदद करेगा।

भारत में सहकारी आंदोलन का इतिहास काफी पुराना है, लेकिन इसके विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है। सहकारी संस्थाएँ अक्सर पेशेवर प्रबंधन की कमी, नवीनतम तकनीकों की अनुपस्थिति और प्रभावी नेतृत्व के अभाव में संघर्ष करती रही हैं। त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय इन सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेगा और सहकारी क्षेत्र को एक स्वर्णिम युग में प्रवेश करने में सहायता करेगा।

भारत में सहकारी आंदोलन: एक संक्षिप्त परिचय

भारत में सहकारी आंदोलन की शुरुआत औपनिवेशिक काल में हुई थी। 1904 में सहकारी समितियों से संबंधित पहला कानून लाया गया, जिसके बाद इस आंदोलन को एक संरचित रूप मिला। आज, भारत में सहकारी समितियाँ कृषि, बैंकिंग, डेयरी, आवास, उपभोक्ता वस्तुएँ और अन्य कई क्षेत्रों में कार्यरत हैं। अमूल, इफको (IFFCO), कृभको (KRIBHCO) जैसी संस्थाएँ सहकारी आंदोलन के सफल उदाहरण हैं।

हालाँकि, सहकारी क्षेत्र की बढ़ती चुनौतियाँ, जैसे डिजिटल तकनीक का अभाव, प्रतिस्पर्धा में पिछड़ना, और व्यावसायिक कौशल की कमी, इसके सतत विकास में बाधा बन रही हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है।

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय की स्थापना निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए की जा रही है:

1. युवाओं के लिए रोजगारपरक शिक्षा: सहकारी क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा की कमी के कारण युवा इस क्षेत्र की ओर आकर्षित नहीं होते। यह विश्वविद्यालय युवाओं को सहकारी प्रबंधन, वित्तीय समावेशन, सहकारी विपणन, डिजिटल सहकारिता और अन्य विषयों में विशेष शिक्षा प्रदान करेगा।

2. सहकारी संगठनों का सशक्तिकरण: पेशेवर प्रशिक्षण और नवीनतम शोध के माध्यम से सहकारी समितियों को अधिक प्रभावी और प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जाएगा।

3. डिजिटल युग में सहकारी आंदोलन का विकास: डिजिटल तकनीकों, डेटा एनालिटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग से सहकारी संस्थानों को आधुनिक तकनीकों से जोड़ा जाएगा।

4. ग्लोबल कोऑपरेटिव नेटवर्किंग: विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय सहकारी संगठनों के साथ साझेदारी कर भारतीय सहकारी क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बनाएगा।

रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम: युवाओं के लिए नया करियर विकल्प

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय सहकारी क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाला पहला संस्थान होगा। इसके पाठ्यक्रम विशेष रूप से व्यावहारिक और रोजगारोन्मुख होंगे, जिनमें शामिल होंगे:

1. सहकारी प्रबंधन (Cooperative Management): सहकारी संस्थानों के सुचारू संचालन और नेतृत्व कौशल के लिए।
2. सहकारी वित्त (Cooperative Finance & Banking): सहकारी बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए पेशेवर ट्रेनिंग।
3. डिजिटल सहकारिता (Digital Cooperatives): सहकारी क्षेत्र में डिजिटल तकनीकों के समावेश के लिए।4. सामुदायिक विकास और सहकारिता (Community Development & Cooperatives): ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सहकारी आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए।
4. कृषि और ग्रामीण सहकारिता (Agricultural & Rural Cooperatives): कृषि आधारित सहकारी समितियों को आधुनिक बनाने के लिए।
5. विश्वविद्यालय से डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करने वाले छात्रों को सहकारी संस्थाओं में प्राथमिकता दी जाएगी, जिससे यह एक आकर्षक करियर विकल्प बन सके।

सहकारी शिक्षा, अनुसंधान और प्रशिक्षण का सुदृढ़ीकरण

सहकारी आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए शोध और प्रशिक्षण का विशेष महत्व है। त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान देगा:

1. सहकारी नीतियों पर अनुसंधान: विभिन्न राज्यों और देशों में सहकारी नीतियों का अध्ययन कर भारत के लिए उपयुक्त नीतियों का विकास।
2. प्रशिक्षण कार्यशालाएँ: सहकारी क्षेत्र के कार्यकर्ताओं और प्रबंधकों के लिए समय-समय पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम।
3. नवाचार एवं तकनीकी समावेशन: सहकारी संस्थानों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ब्लॉकचेन और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग।

सहकारी आंदोलन और 'विकसित भारत' का लक्ष्य

भारत सरकार 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। सहकारी क्षेत्र इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय इस लक्ष्य को प्राप्त करने में निम्नलिखित तरीकों से योगदान देगा:

1. **आत्मनिर्भर भारत:** सहकारी समितियाँ स्थानीय स्तर पर उत्पादन और विपणन को बढ़ावा देकर भारत को आत्मनिर्भर बनाएँगी।
2. **रोजगार सृजन:** सहकारी क्षेत्र के विस्तार से लाखों युवाओं को रोजगार मिलेगा।
3. **कृषि क्षेत्र में क्रांति:** कृषि सहकारी समितियों को डिजिटल तकनीक से जोड़कर किसानों की आय बढ़ाई जाएगी।
4. **वित्तीय समावेशन:** सहकारी बैंक और क्रेडिट सोसायटीज़ ग्रामीण भारत को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करेंगी।
5. **स्थानीय से वैश्विक:** त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय भारतीय सहकारी संगठनों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगा, जिससे वे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी पहचान बना सकें।
6. **हरित और सतत विकास:** सहकारी संगठनों को पर्यावरण अनुकूल नीतियों के साथ जोड़ा जाएगा, जिससे सतत विकास को बल मिलेगा।

निष्कर्ष -

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय सहकारी आंदोलन के लिए एक ऐतिहासिक कदम साबित होगा। यह विश्वविद्यालय सहकारी शिक्षा को एक नए स्तर पर ले जाएगा, जिससे सहकारी संस्थानों का कार्य अधिक पेशेवर, आधुनिक और प्रभावी होगा।

· यह युवाओं को एक वैकल्पिक और आकर्षक करियर विकल्प प्रदान करेगा।

· सहकारी संस्थानों को डिजिटल और तकनीकी रूप से सशक्त बनाएगा।

· वैश्विक सहकारी संगठनों के साथ भारत की भागीदारी को मजबूत करेगा।

· 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहकारी क्षेत्र की भूमिका को प्रभावी बनाएगा।

इस प्रकार, त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय भारत में सहकारी आंदोलन को स्वर्णिम युग में प्रवेश कराने वाला एक ऐतिहासिक संस्थान साबित होगा।

कृषि और सहकारी विकास में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

- अजीत, एएफई, कोचीन शाखा द्वारा

कृषि के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का विकास उत्पादकता, दक्षता और स्थिरता को बढ़ाकर परिवर्तन ला रहा है। यहां कुछ क्षेत्र सूचीबद्ध हैं जहां AI कृषि में प्रभाव डाल रही है:

1. प्रिसिजन फार्मिंग

यह एक ऐसी फार्म प्रबंधन अवधारणा है जो GPS (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम), GIS (जियोग्राफिकल इनफॉर्मेशन सिस्टम), रिमोट सेंसिंग और डेटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे इनपुट को अनुकूलित करती है, जिससे कृषि में उत्पादकता, दक्षता और स्थिरता बढ़ती है। AI-संचालित उपकरणों का उपयोग सेंसर, उपग्रहों और ड्रोन से डेटा के विश्लेषण के लिए किया जाता है, जिससे सिंचाई, उर्वरण और कीट नियंत्रण को अनुकूल बनाया जा सके। इससे संसाधनों की बर्बादी कम होती है और फसल उपज बढ़ती है। यह साइट-स्पेसिफिक क्रॉप मैनेजमेंट (SSCM) पर केंद्रित है, जो एक खेत के भीतर विविधताओं का विश्लेषण करके और तदनुसार इनपुट लागू करके अपशिष्ट को कम करती है और उपज में सुधार करती है।

2. फसल निगरानी और बीमारी का पता लगाना

फसल निगरानी आधुनिक कृषि के लिए आवश्यक है क्योंकि यह इष्टतम फसल विकास सुनिश्चित करती है, उपज को अधिकतम करती है और नुकसान को कम करती है। AI-आधारित छवि पहचान और कंप्यूटर विज़न फसल रोगों, पोषक तत्वों की कमी और कीट संक्रमण का पता लगाते हैं। किसान महत्वपूर्ण क्षति होने से पहले निवारक कार्रवाई कर सकते हैं। उदाहरण: क्रॉपइन -- स्मार्टफार्म, प्लांटिक्स, एग्रीसेंस (माइक्रोसॉफ्ट और ICRISAT द्वारा)

3. स्मार्ट सिंचाई प्रणाली

स्मार्ट सिंचाई एक उन्नत सिंचाई विधि है जो पानी के कुशल उपयोग को अनुकूलित करने के लिए AI, IoT

(इंटरनेट ऑफ थिंग्स) सेंसर, मौसम पूर्वानुमान और रीयल-टाइम डेटा का उपयोग करती है। यह सुनिश्चित करती है कि फसलों को सही समय पर सही मात्रा में पानी मिले, जिससे पानी की बर्बादी कम हो और उत्पादकता में सुधार हो। AI-संचालित सिंचाई मॉडल मौसम डेटा, मिट्टी की नमी सेंसर और पिछले उपयोग पैटर्न का उपयोग पानी के वितरण को अनुकूलित करने के लिए करते हैं, जिससे बर्बादी कम होती है और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है।

4. सप्लाई चेन और मार्केट फोरकास्टिंग

कृषि सप्लाई चेन कृषि उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण, परिवहन और वितरण की पूरी प्रक्रिया को संदर्भित

करती है, जो किसानों से लेकर उपभोक्ताओं तक पहुंचती है। इसमें इनपुट आपूर्तिकर्ता, किसान, प्रोसेसर, थोक विक्रेता, खुदरा विक्रेता और उपभोक्ता शामिल हैं। कुशल सप्लाई चेन प्रबंधन फसल कटाई के बाद नुकसान को कम करना, उचित मूल्य निर्धारण और कृषि वस्तुओं की समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करता है। कृषि में मार्केट फोरकास्टिंग कृषि उत्पादों की भविष्य की मांग, आपूर्ति और कीमतों की भविष्यवाणी करने के लिए ऐतिहासिक डेटा, AI, मौसम पैटर्न और आर्थिक रुझानों का उपयोग करने की प्रक्रिया है। यह किसानों, व्यापारियों और नीति निर्माताओं को रोपण, बिक्री और फसलों के मूल्य निर्धारण के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद करती है। मशीन लर्निंग मॉडल फसल उपज, बाजार मांग और मूल्य रुझानों की भविष्यवाणी करते हैं, जिससे किसानों को रोपण, भंडारण और बिक्री रणनीतियों के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है। उदाहरण: कृषि नेटवर्क, एग्रीबाज़ार, क्रॉपइन -- स्मार्टरिस्क, एग्रोस्टार

5. मौसम भविष्यवाणी और आपदा प्रबंधन

मौसम किसी विशेष स्थान पर किसी विशेष समय पर वायुमंडलीय स्थितियों को संदर्भित करता है, जिसमें तापमान, आर्द्रता, हवा की गति, वर्षा और वायु दबाव जैसे कारक शामिल हैं। यह अल्पकालिक है, आमतौर पर घंटों से लेकर कुछ दिनों तक। एक आपदा एक अचानक, विनाशकारी घटना है जो जीवन, संपत्ति और पर्यावरण को महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचाती है, अक्सर सामान्य गतिविधियों को बाधित करती है। आपदाएं प्राकृतिक (जैसे, बाढ़, भूकंप, तूफान) या मानव निर्मित (जैसे, औद्योगिक दुर्घटनाएं, रासायनिक रिसाव) हो सकती हैं। AI उपग्रह डेटा और मौसम संबंधी जानकारी को एकीकृत करके सटीक मौसम पूर्वानुमान प्रदान करता है, जिससे किसानों को सूखे या बाढ़ जैसी चरम मौसम स्थितियों के लिए तैयार होने में मदद मिलती है।

6. अन्य क्षेत्रों में शामिल हैं

- AI-आधारित सलाहकार प्रणालियां: AI-संचालित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट किसानों को सर्वोत्तम प्रथाओं, कीट प्रबंधन और फसल चयन पर रीयल-टाइम सलाह प्रदान करते हैं।
- स्वचालित मशीनरी और रोबोटिक्स: स्वायत्त ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और ड्रोन न्यूनतम मानव हस्तक्षेप के साथ रोपण, निराई और कटाई जैसे कार्यों को करने के लिए AI का उपयोग करते हैं।
- मिट्टी का स्वास्थ्य और उर्वरता प्रबंधन: AI मिट्टी की संरचना डेटा का विश्लेषण करता है और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार और दीर्घकालिक उत्पादकता बनाए रखने के लिए सर्वोत्तम फसलों, उर्वरकों और मिट्टी के उपचार की सिफारिश करता है।

हमारे सहकारी विकास के लिए AI

कृषि सहकारी समितियां छोटे और सीमांत किसानों को संसाधनों, बाजारों और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच प्रदान करके उनका समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। AI इन सहकारी समितियों की दक्षता, लाभप्रदता और स्थिरता को काफी बढ़ा सकती है।

यहां प्रमुख क्षेत्र सूचीबद्ध हैं जहां AI भारत में कृषि सहकारी विकास को बढ़ावा दे सकती है:

1. AI संचालित स्मार्ट फार्मिंग समाधान जिसमें प्रिसिजन फार्मिंग, कीट और रोग का पता लगाना और स्वचालित सिंचाई प्रणाली शामिल है।

2. वित्तीय समावेशन और क्रेडिट एक्सेस के लिए AI जिसमें AI संचालित क्रेडिट स्कोरिंग, धोखाधड़ी का पता लगाना और स्वचालित ऋण वितरण और वसूली शामिल है।

3. मार्केट लिंकेज और मूल्य पूर्वानुमान के लिए AI जो AI आधारित मूल्य भविष्यवाणी, AI संचालित बाजार प्लेटफॉर्म और पारदर्शी लेनदेन के लिए ब्लॉकचेन और AI का उपयोग करता है।

4. सहकारी समितियों के लिए सप्लाई चेन और लॉजिस्टिक्स में AI जो स्टोरेज और इन्वेंट्री प्रबंधन को अनुकूलित करता है, स्मार्ट परिवहन और लॉजिस्टिक्स और कोल्ड चेन प्रबंधन भी करता है।

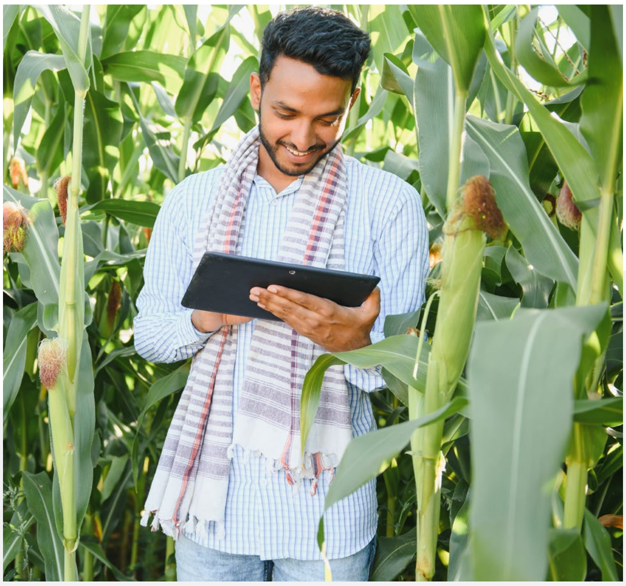

5. स्वचालित सदस्य प्रबंधन, वर्चुअल सलाहकार सेवाओं और नीति निर्माण के लिए पूर्वानुमानित विश्लेषण द्वारा शासन और सहकारी प्रबंधन के लिए AI

उपरोक्त सूचीबद्ध संचालन के लिए चुनौतियों में सहकारी सदस्यों के बीच डिजिटल साक्षरता, छोटे पैमाने की सहकारी संस्थाओं के लिए AI अपनाने की उच्च लागत और डेटा गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएं शामिल हैं।

कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका

- धनराज विजयकुमार बरबाडे, एएफई, बीज और जैव उर्वरक प्रभाग, इंदौर

बढ़ती दुनिया की आबादी के साथ और खाद्य की मांग बढ़ने के साथ, सीमित मात्रा में भूमि पर उत्पादन बढ़ाने के लिए कुशल खेती के तरीकों का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। AI हर दिन कृषि में अधिक प्रचलित हो रही है, और AI-आधारित उपकरण वर्तमान खेती प्रणाली को ऊंचा उठा रहे हैं। कृषि कई चर पर निर्भर है, जिसमें मिट्टी की पोषक तत्व सामग्री, नमी, फसल रोटेशन, वर्षा, तापमान आदि शामिल हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित उत्पाद फसल उत्पादकता को ट्रैक करने के लिए इन चरों का उपयोग कर सकते हैं। खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में विभिन्न कृषि संबंधित कार्यों में सुधार के लिए, उद्योग कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकियों की ओर रुख कर रहे हैं।

AI में कृषि अनुप्रयोगों और समाधानों को किसानों को जल प्रबंधन, फसल रोटेशन, समय पर कटाई, उगाई जाने वाली फसल के प्रकार, इष्टतम रोपण, कीट हमलों और पोषण प्रबंधन पर सही सलाह देकर सटीक और नियंत्रित खेती में मदद करने के लिए विकसित किया गया है।

AI-सक्षम सिस्टम मौसम की भविष्यवाणी करते हैं, कृषि स्थिरता की निगरानी करते हैं, और उपग्रहों और ड्रोन द्वारा ली गई तस्वीरों के साथ तापमान, वर्षा, हवा की गति और सूर्य विकिरण जैसे डेटा का उपयोग करके खेतों का रोगों या कीटों और कम पोषित पौधों की उपस्थिति के लिए मूल्यांकन करते हैं।

एसएमएस-सक्षम फोन और सोइंग ऐप जैसे बुनियादी उपकरणों के साथ, कनेक्टिविटी के बिना किसान तुरंत AI से लाभ उठा सकते हैं। वाई-फाई कनेक्टिविटी वाले किसान अपने खेतों के लिए लगातार AI-अनुकूलित योजना प्राप्त करने के लिए AI ऐप्स का उपयोग कर सकते हैं। IoT और AI-संचालित प्रौद्योगिकियों की मदद से किसान खाद्य की बढ़ती मांग को पूरा करते हुए उत्पादन और राजस्व बढ़ा सकते हैं और कीमती प्राकृतिक संसाधनों को कम किए बिना जिम्मेदारी से काम कर सकते हैं। जलवायु चर में गर्मी, वर्षा, हवा और सौर विकिरण शामिल हैं।

ऐसे कई संभावित क्षेत्र हैं जिनमें AI किसानों की मदद कर सकती है जैसे:

1. AI का उपयोग करके मौसम का पूर्वानुमान:

जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण के कारण किसानों के लिए बीज बोने का सबसे अच्छा समय निर्धारित करना चुनौतीपूर्ण है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से, किसान मौसम पूर्वानुमान का उपयोग करके मौसम की स्थितियों का विश्लेषण कर सकते हैं, जो उन्हें उस प्रकार की फसल की योजना बनाने में मदद करता है जिसे उगाया जा सकता है और कब बीज बोए जाने चाहिए।

2. मिट्टी और फसल स्वास्थ्य निगरानी प्रणाली:

मिट्टी का प्रकार और मिट्टी का पोषण उन फसलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है जो उगाई जाती हैं और उनकी गुणवत्ता। बढ़ते वनों की कटाई के परिणामस्वरूप मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो रही है, जिससे इसका आकलन करना मुश्किल हो गया है।

3. AI रोबोटिक्स:

AI के आधार पर ऐसे रोबोट विकसित किए जा रहे हैं जो खेती के क्षेत्रों में विभिन्न कार्यों को आसानी से कर सकते हैं। लोगों की तुलना में, इन रोबोटों को फसलों को तेजी से और अधिक मात्रा में काटने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जबकि खरपतवार को नियंत्रित किया जाता है। इन रोबोटों को फसलों की कटाई और पैकिंग करने के साथ-साथ फसलों की गुणवत्ता का निरीक्षण करने और

खरपतवार की तलाश करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। ये रोबोट कृषि श्रमिकों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों को भी दूर कर सकते हैं।

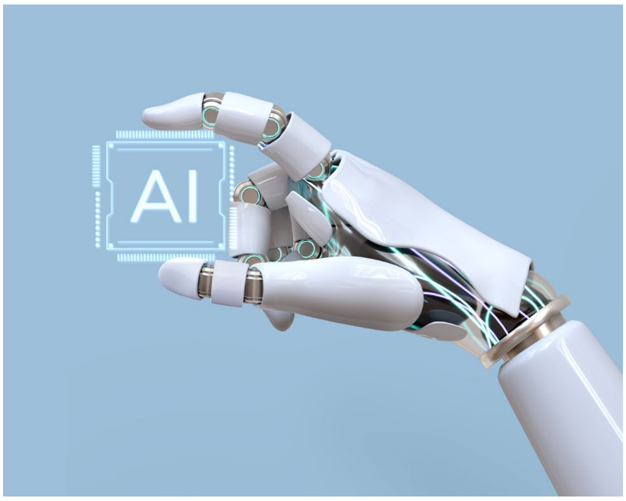

4. AI का उपयोग करके कीटों का पता लगाना:

किसानों के सबसे घातक दुश्मनों में से एक कीट हैं जो कृषि को नुकसान पहुंचाते हैं। AI सिस्टम उपग्रह चित्रों और ऐतिहासिक डेटा का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए करते हैं कि क्या कोई कीट आया है और यदि हां, तो कौन सी प्रजातियां - जैसे टिड्डे, ग्रासहॉपर और अन्य। AI किसानों को उनके मोबाइल फोन पर अलर्ट भेजकर कीटों के खिलाफ लड़ाई में मदद करती है ताकि किसान आवश्यक सावधानियां बरत सकें और आवश्यक कीट नियंत्रण का उपयोग कर सकें।

5. ड्रोन का उपयोग करके फसल स्वास्थ्य निगरानी:

ड्रोन प्रौद्योगिकी ने भारत के कृषि क्षेत्र की उत्पादकता पर स्थायी प्रभाव डाला है। इक्विनॉक्स ड्रोन, ध्रुव स्पेस आदि जैसी कंपनियां किसानों को विभिन्न खेती संचालन में उत्पादकता बढ़ाने के लिए ड्रोन-संचालित समाधान प्रदान करती हैं, जिसमें प्रिसिजन फार्मिंग, पशुधन प्रबंधन, कीटनाशक अनुप्रयोग, फसल तनाव पहचान, उपचार योजना, पौधों की वृद्धि की निगरानी और स्काउटिंग शामिल हैं। भविष्य में, AI किसानों को कृषि प्रौद्योगिकीविदों में विकसित होने में मदद करेगी, पौधों की व्यक्तिगत पंक्तियों तक उपज को अनुकूलित करने के लिए डेटा का उपयोग करेगी।

बेहतर भविष्य के लिए जैविक उर्वरकों द्वारा प्रकृति का पोषण

- एमके रावत, प्रमुख एनएसबीडी इंदौर द्वारा

मिट्टी हमारे पृथ्वी ग्रह पर जीवन का मूलभूत आधार है, न कि कोई वस्तु। मिट्टी एक व्यापक, प्राचीन बुद्धिमान प्रक्रिया है - मिट्टी में मौजूद बुद्धि उसमें लगाए गए बीज के जीवन को पहचानती है। यह बीज को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती है जिससे पौधा विकसित होता है, जो बदले में भोजन उत्पन्न करता है और यह भोजन मिट्टी से आता है। हम इसका सेवन करके शरीर को पोषित करते हैं। इस महान योगदान के अलावा, मिट्टी पृथ्वी पर जीवन के लिए विविध प्रकार के कार्य और सेवाएं प्रदान करती है।

अब समय आ गया है कि हम मिट्टी की महानता को अपनी जागरूकता में लाएं, जो अमाप है। हमें इस तथ्य से भी अवगत होना चाहिए कि मिट्टी के वर्तमान क्षरण की दर से अनुमान है कि 2050 तक पृथ्वी की लगभग 90% ऊपरी मिट्टी निम्नीकृत हो सकती है, जिससे खाद्य उत्पादन में 45% की गिरावट आएगी जब दुनिया को 9.3 अरब लोगों को खिलाना होगा।

वर्तमान में रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग कृषि उत्पादकता में गिरावट, मिट्टी की गिरावट, ग्लोबल वार्मिंग, भोजन में विषाक्त रसायनों की उपस्थिति, रासायनिक उर्वरकों/कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण मिट्टी और जल प्रदूषण के लिए मुख्य निर्णायक कारकों में से एक है।

इसलिए समय की आवश्यकता है कि हरी खाद, जैविक खाद, जैविक उर्वरकों के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों के समझदारीपूर्ण उपयोग सहित एकीकृत पौधे पोषक तत्वों को अपनाया जाए। जैविक उर्वरक लाभकारी सूक्ष्मजीवों को ले जाने वाले तैयारी हैं जो प्राकृतिक पोषक तत्वों को गतिशील करते हैं और पुनर्चक्रित करते हैं।

नेफेड एक शीर्ष स्तरीय सहकारी संगठन है जिसने कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय (भारत सरकार) के तहत इस महान जैव प्रौद्योगिकी के महत्व को समझा है। नेफेड का अपना विनिर्माण इकाई 1984-85 से इंदौर (मध्य प्रदेश) में है। नेफेड को जैविक उर्वरकों के उत्पादन की गुणवत्ता के लिए पिछले 11 लगातार बार राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार (भारत सरकार) प्राप्त हो रहा है। नेफेड भारत में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए जैविक उर्वरकों और जैव-कवकनाशकों की पूरी श्रृंखला को कवर करता है। सभी उत्पाद पर्यावरण अनुकूल हैं और प्रकृति में मिट्टी के स्वास्थ्य, उर्वरता और फसल संरक्षण को बहाल करने में मदद करते हैं, जिससे पर्यावरण और सामाजिक सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।

वर्तमान स्थिति में नेफेड बीज और जैविक उर्वरक प्रभाग, इंदौर द्वारा निम्नलिखित जैविक उर्वरकों का निर्माण किया जाता है:

1. नेफेड राइज़ोबियम
2. नेफेड एजोटोबैक्टर
3. नेफेड PSB
4. नेफेड कंपोस्टिंग कल्चर
5. नेफेड ट्राइकोडर्मा विरिडी 1.5% WP (जैव-कवकनाशक)

उपरोक्त के अलावा, NSBD जैविक उर्वरक इकाई सेल किसानों को कृषि अपशिष्ट को उपयोगी प्राकृतिक जैविक खाद में परिवर्तित करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को औपचारिक क्षेत्रों में लाना

- कथिरावन, एएम-II, कोचीन शाखा द्वारा

ग्रामीण क्षेत्रों का विकास एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारक शामिल हैं। यह तब होगा जब ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को कृषि से बाहर निकाला जाएगा क्योंकि विश्व कृषि क्रांति से औद्योगिक क्रांति 5.0 की ओर बढ़ चुका है। लेकिन भारत महिलाओं को उनके घरों से बाहर निकालने में विफल रहा है। यहां तक कि घर भी महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं हैं जहां वे अपनी मासिक धर्म अवधि के दौरान अछूत मानी जाती हैं, न तो उनके पति द्वारा और न ही उनके बच्चों द्वारा सम्मानित की जाती हैं। भारत में महिलाओं की औसत विवाह आयु 20-24 वर्ष है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर शहरी क्षेत्र की तुलना में कम है। विवाह के बाद महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने से रोक दिया जाता है। इसके बिना वे अपने जीवन के किसी भी चरण में रोजगार योग्य बनने में असमर्थ होती हैं।

उदाहरण के लिए: एक महिला की शादी 21 वर्ष की आयु में हुई और वह केवल 8वीं कक्षा तक पढ़ी, उसके लिए अपने शेष जीवन में (भारत में महिलाओं का औसत जीवनकाल अब 68 वर्ष है, जो आने वाले भविष्य में बढ़ेगा) नई तकनीकों को अपनाना असंभव होगा। आने वाले भविष्य में तकनीकी प्रगति के स्तर के साथ, वह 8वीं कक्षा की महिला तक पहुंचने वाली तकनीक का स्तर बहुत कम होगा।

इसके अलावा, श्रम और रोजगार मंत्रालय के 2023 के रोजगार आंकड़ों के अनुसार, परिवार की आय जितनी अधिक होगी, महिलाओं के नौकरी में जाने की आवश्यकता उतनी ही कम होगी, भले ही महिला अच्छी शिक्षित हो। और केवल उच्च शिक्षित महिलाएं ही कार्यबल में होंगी।

यदि हम मानें कि उपरोक्त महिला स्वरोजगार करती है, तो वर्तमान में दुनिया में हो रही तकनीकी प्रगति की गति में, वह उस व्यवसाय में टिक नहीं पाएगी। इसके अलावा, भारत में संगठित क्षेत्र 10 से 12% की दर से बढ़ रहा है,

उसकी जैसी शैक्षिक योग्यता वाली महिला फिर कभी औपचारिक क्षेत्र में नहीं जा पाएगी। भारत में महिलाओं के भूमि स्वामित्व का प्रतिशत केवल 13-20% के आसपास है। इसलिए, जिन महिलाओं ने अपनी शिक्षा 8वीं कक्षा में बंद कर दी है, उन्हें फिर से शिक्षित करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें कामकाजी आबादी के औपचारिक क्षेत्र में लाया जा सके और बेहतर भविष्य हो सके।

भारत में ग्रामीण क्षेत्र की लगभग 50% महिलाएं बिना किसी साक्षरता के अशिक्षित हैं। उन्हें अपने विवाह से पहले प्रचलित सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के कारण अपनी शेष 50 वर्ष की आयु बिना शिक्षा के जीनी पड़ती है। सरकार उन्हें शिक्षा देने के लिए कुछ पहल क्यों नहीं करती?

सरकार अशिक्षित महिलाओं को स्कूली शिक्षा प्राप्त करने में मदद करने और उन्हें कॉलेज शिक्षा के लिए नामांकित करने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए अलग स्कूल/संस्थान स्थापित कर सकती है।

सरकार द्वारा स्कूल स्थापित करना (आउटसोर्सिंग नहीं) ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित और बेरोजगार कई ग्रामीण महिलाओं को रोजगार देगा। आंशिक समय का स्कूली शिक्षण।

रोजगार के अवसर पैदा करना।

बुनियादी ढांचे पर खर्च में वृद्धि होगी।

जो महिलाएं फिर से अपनी शिक्षा जारी रख रही हैं, उन्हें सशर्त नकद हस्तांतरण दिया जा सकता है।

ये नकद हस्तांतरण बदले में उसके परिवार की आय बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

शिक्षा का स्तर कुल प्रजनन दर को कम करेगा जो जनसंख्या नियंत्रण में मदद करेगा।

वह घरेलू वस्तुओं जैसे मिक्सी, ग्राइंडर, वाशिंग मशीन पर पैसा खर्च कर सकती है जिससे घर पर उसका काम कम होगा और स्थानीय विनिर्माण कंपनियों को भी मदद मिलेगी क्योंकि केवल 20-30% घरेलू वस्तुएं अन्य देशों से आयात की जाती हैं।

अपने बच्चे के पोषण और शिक्षा पर बेहतर खर्च।

महिलाओं को कृषि से बाहर लाने से मशीनीकरण की मांग बढ़ेगी। क्योंकि अधिकांश ग्रामीण महिलाएं कृषि पर निर्भर हैं, खेत की भूमि पर मजदूर के रूप में काम करती हैं।

सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाएगा।

यदि हम घरों में महिलाओं को शिक्षित करते हैं तो घर पर बच्चों की शिक्षा के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि इससे बच्चों की स्कूल छोड़ने की दर कम हो सकती है।

हालांकि, महिलाओं को फिर से शिक्षित करने की व्यावहारिकता पर शोध/चर्चा की जानी चाहिए ताकि यह विचार संभव हो सके।

तकनीकी प्रसार आसान होगा, ताकि महिलाएं ड्रोन जैसे तकनीकी उपकरणों का उपयोग कर सकें।

शिक्षा के बिना और लोगों को कृषि से बाहर निकाले बिना, ग्रामीण विकास असंभव है और यह अप्रासंगिक रहता है क्योंकि शिक्षा न होने के कारण वे अनुकूल नहीं हो सकते।

अवधारणा की शक्ति: जनसंपर्क क्यों है हर संगठन की जीवन रेखा

- पल्लवी चौधरी, एएम, मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा

सूचना और अवधारणा से संचालित इस दुनिया में, किसी संगठन की सफलता अब केवल उसके उत्पादों या सेवाओं की गुणवत्ता से ही निर्धारित नहीं होती है। प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता और दृश्यता अब समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहीं पर जनसंपर्क (पीआर) एक अनगाए नायक के रूप में उभरता है, जो चुपचाप कथानकों को आकार देता है और संगठनों और उनके दर्शकों के बीच सेतु बनाता है।

मेगाफोन से परे: एक रणनीतिक संपत्ति के रूप में पीआर

कई लोग गलती से पीआर को केवल प्रचार—प्रेस विज्ञप्ति, मीडिया कवरेज और संकट प्रबंधन के साथ जोड़ते हैं। हालांकि ये अभिन्न घटक हैं, आधुनिक पीआर पारंपरिक सीमाओं से परे है। यह एक आकर्षक ब्रांड कहानी बनाने, प्रामाणिक संबंध विकसित करने और यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि संगठन के मूल्य उसके हितधारकों के साथ प्रतिध्वनित हों।

प्रभावी पीआर रणनीतिक है। यह संचार प्रयासों को व्यावसायिक लक्ष्यों के साथ संरेखित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि हर संदेश संगठन के मिशन को मजबूत करे। चाहे वह एक नया उत्पाद लॉन्च करना हो, एक चुनौतीपूर्ण स्थिति को संभालना हो, या कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी का समर्थन करना हो, पीआर पेशेवर नेविगेटर के रूप में कार्य करते हैं, जो संगठनों को जनमत के जटिल पानी के माध्यम से निर्देशित करते हैं।

विश्वास का निर्माण, एक कहानी के समय

विश्वास आधुनिक व्यवसाय की मुद्रा है। उपभोक्ता अब उत्पाद नहीं खरीदते; वे ब्रांड में विश्वास करते हैं। एक संगठन की प्रतिष्ठा उसकी सबसे बड़ी संपत्ति या उसकी सबसे महत्वपूर्ण देनदारी हो सकती है। पीआर पारदर्शिता सुनिश्चित करके, सकारात्मक कहानियों को बढ़ावा देकर और चिंताओं को सक्रिय रूप से संबोधित करके विश्वास विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विचार करें कि अमूल जैसे ब्रांड ने पीआर का लाभ न केवल उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए बल्कि सामाजिक कारणों का समर्थन करने के लिए भी उठाया है, जिससे उनकी ब्रांड पहचान मजबूत हुई है। मौजूदा घटनाओं को संबोधित करने वाले उनके प्रतिष्ठित प्रासंगिक विज्ञापनों से लेकर किसान कल्याण को बढ़ावा देने वाले अभियानों तक, अमूल ने विचारपूर्ण पीआर रणनीतियों के माध्यम से सफलतापूर्वक विश्वास और वफादारी बनाई है।

संकट प्रबंधन: सच्ची पीआर कौशल का परीक्षण

"एक प्रतिष्ठा बनाने में 20 साल लगते हैं और इसे बर्बाद करने में पांच मिनट," वारेन बफेट ने प्रसिद्ध रूप से कहा था। जब संकट आते हैं—एक उत्पाद वापसी, एक घोटाला, या एक पीआर गलती—एक संगठन कैसे संवाद करता है, यह उसके भविष्य को बना या बिगाड़ सकता है।

पीआर पेशेवर संकट के दौरान प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में कार्य करते हैं, कथाओं को नियंत्रित करते हैं, गलत सूचना को स्पष्ट करते हैं और यह सुनिश्चित

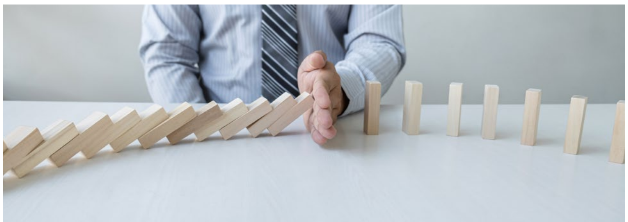

करते हैं कि हितधारक संगठन का पक्ष सुनें। एक अच्छी तरह से संभाला गया संकट यहां तक कि एक संगठन की प्रतिष्ठा को मजबूत कर सकता है, जवाबदेही और लचीलापन प्रदर्शित कर सकता है।

सकारात्मक दृश्यता के माध्यम से विकास को बढ़ावा देना

जबकि विज्ञापन ध्यान के लिए भुगतान करता है, पीआर इसे अर्जित करता है। सकारात्मक मीडिया कवरेज, सोच-समझकर तैयार किए गए नेतृत्व लेख और उद्योग पुरस्कार विज्ञापनों के प्रत्यक्ष वाणिज्यिक स्वर के बिना

एक संगठन की विश्वसनीयता बढ़ाते हैं। यह “अर्जित मीडिया” अक्सर दर्शकों के साथ अधिक वजन रखता है, निर्णयों को प्रभावित करता है और व्यापार विकास को बढ़ावा देता है।

इसके अलावा, पीआर मीडिया संबंधों से परे है। आज, यह सोशल मीडिया जुड़ाव, प्रभावकारी साझेदारी और सामग्री विपणन को शामिल करता है—सभी ब्रांड अवधारणा को आकार देने के लिए टैंडेम में काम करते हैं।

सोशल मीडिया प्रभाव: पीआर प्रयासों का विस्तार

सोशल मीडिया जनसंपर्क (पीआर) के लिए एक अपरिहार्य उपकरण बन गया है, जो गहराई से प्रभावित करता है कि संगठन कैसे अपने दर्शकों के साथ संवाद और जुड़ाव करते हैं। जनवरी 2025 तक, दुनिया भर में 5.24 अरब से अधिक लोग सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, जो वैश्विक आबादी का लगभग 63.9% है (स्रोत: https://www.statista.com/statistics/617136/digital-population-worldwide/)। यह विशाल उपयोगकर्ता आधार संगठनों को अपनी दृश्यता बढ़ाने, संबंध बनाने और अपनी प्रतिष्ठा का प्रबंधन करने के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करता है।

सोशल मीडिया सार्वजनिक धारणा को महत्वपूर्ण रूप से आकार देता है। अध्ययनों से पता चलता है कि 26% इंटरनेट उपयोगकर्ता खरीदने के लिए उत्पादों की खोज के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, जो

उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित करने में प्लेटफॉर्म की भूमिका को रेखांकित करता है। लगातार प्रामाणिक और मूल्य-संचालित सामग्री साझा करके, संगठन अपनी विश्वसनीयता बढ़ा सकते हैं और एक वफादार समुदाय विकसित कर सकते हैं।

ट्विटर, लिंक्डइन और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म संगठनों को रीयल-टाइम अपडेट साझा करने, अपने ब्रांड को मानवीय बनाने और प्रशंसा और आलोचना दोनों पर त्वरित प्रतिक्रिया देने की अनुमति देते हैं। यह तत्काल, दो-तरफा संचार हितधारकों के साथ संबंधों को मजबूत करता है और ब्रांड की दृश्यता बढ़ाता है।

एक डिजिटल दुनिया में मानवीय स्पर्श

एल्गोरिदम और स्वचालन से प्रभावित एक युग में, पीआर संगठनात्मक संचार में मानवीय स्पर्श लाता है। यह सुनिश्चित करता है कि संदेश प्रामाणिक, सहानुभूतिपूर्ण और संबंधित रहें—ऐसे गुण जिन्हें अकेले एल्गोरिदम पुनः उत्पन्न नहीं कर सकते।

अंततः, जनसंपर्क केवल प्रतिष्ठा प्रबंधन के बारे में नहीं है—यह संबंध बनाने के बारे में है। न केवल जीवित रहने बल्कि फलने-फूलने का लक्ष्य रखने वाले संगठनों के लिए, पीआर में निवेश वैकल्पिक नहीं है—यह अनिवार्य है।

इसी तरह, पीआर NAFED जैसे संगठनों के लिए परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकता है। किसानों का समर्थन करने, कृषि स्थिरता को बढ़ावा देने और उचित मूल्य सुनिश्चित करने के संघ के प्रयासों को उजागर करके, पीआर NAFED की प्रतिष्ठा को कृषि समुदाय के चैंपियन के रूप में बढ़ा सकता है। हमारी पहल, साझेदारी और सफलताओं के बारे में निरंतर कहानी कहना हितधारकों, जिसमें किसान, नीति निर्माता और उपभोक्ता शामिल हैं, के साथ मजबूत संबंध बना सकता है।

स्रोत: https://www.statista.com.
https://blog.hubspot.com.

भारत के सहकारी संस्थाओं के लिए एक नया युग: त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय की भूमिका

- ऋतुराज सिंह, सहायक प्रबंधक, खुदरा व्यापार शाखा, दिल्ली द्वारा

भारत के सहकारी क्षेत्र को मजबूत करने के लिए एक रणनीतिक पहल में, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 3 फरवरी, 2025 को लोकसभा में त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक पेश किया। विधेयक इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट आनंद (IRMA) को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय में परिवर्तित करने का प्रस्ताव करता है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य सहकारी प्रबंधन, वित्त और शासन में संरचित शिक्षा और अनुसंधान प्रदान करना है, जिससे भारत में सहकारी आंदोलन की दक्षता और स्थिरता बढ़ाई जा सके।

एक समर्पित सहकारी विश्वविद्यालय की आवश्यकता

भारत में 8.5 लाख से अधिक पंजीकृत सहकारी समितियां हैं, जो कृषि, डेयरी, मत्स्य पालन, बैंकिंग, आवास और उपभोक्ता वस्तुओं जैसे क्षेत्रों को कवर करती हैं। ये सहकारी संस्थाएं ग्रामीण रोजगार, वित्तीय समावेशन और आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि, इन संगठनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित और आधुनिकीकृत करने के लिए विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी है। कुछ प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार हैं:

1. खंडित और पुरानी प्रशिक्षण पद्धति

- भारत में सहकारी शिक्षा मानकीकृत नहीं है, और अधिकांश संस्थान सामान्य प्रबंधन पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं जो सहकारी संस्थाओं की अनूठी चुनौतियों के अनुरूप नहीं हैं।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम अल्पकालिक और असंरचित हैं, जो सहकारी कानूनों, शासन और व्यावसायिक मॉडल की व्यापक समझ प्रदान करने में विफल रहते हैं।

2. कुशल पेशेवरों की कमी

- कॉर्पोरेट उद्यमों के विपरीत, सहकारी संस्थाओं को ऐसे नेताओं की आवश्यकता होती है जो सदस्य-संचालित शासन, लाभ-साझाकरण मॉडल और ग्रामीण अर्थशास्त्र को समझते हों।
- कई सहकारी समितियां, विशेष रूप से प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (PACS), अच्छी तरह से प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी के कारण संघर्ष करती हैं।

3. कम उत्पादकता और नवाचार

- सहकारी क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 20% योगदान देता है, फिर भी कई संगठन पुरानी प्रथाओं और खराब प्रबंधन के कारण अकुशल रहते हैं।
- सहकारी वित्त, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और डिजिटल एकीकरण में सीमित अनुसंधान और नवाचार है।

4. वैश्विक प्रतिस्पर्धा और बाजार पहुंच

- भारतीय सहकारी संस्थाओं को डेयरी (अमूल बनाम वैश्विक ब्रांड) और कृषि (सहकारी खेती बनाम कृषि व्यवसाय कंपनियां) जैसे क्षेत्रों में निजी उद्यमों और बहुराष्ट्रीय निगमों से प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता है।
- आधुनिक सहकारी व्यावसायिक रणनीतियों, निर्यात प्रबंधन और डिजिटल मार्केटिंग में प्रशिक्षण की बढ़ती आवश्यकता है।

इन चुनौतियों को संबोधित करने के लिए, त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय सहकारी शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए उत्कृष्टता केंद्र के रूप में काम करेगा, भविष्य के नेताओं को विशेष ज्ञान और व्यावहारिक कौशल से लैस करेगा। प्रस्तावित विश्वविद्यालय निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेगा:

1. संरचित शिक्षा और मानकीकरण

- सहकारी प्रबंधन, ग्रामीण वित्त और कृषि व्यवसाय में डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाणन कार्यक्रम शुरू करना।
- NAFED, ICAR, IIMs, NABARD और NCDC जैसे संस्थानों के साथ साझेदारी में सहकारी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम विकसित करना।

2. कौशल विकास और नेतृत्व प्रशिक्षण

- o PACS अधिकारियों, सहकारी बैंक अधिकारियों, डेयरी प्रबंधकों और स्वयं सहायता समूह (SHG) नेताओं को शासन और वित्तीय प्रबंधन में प्रशिक्षित करना।
- o सहकारी संगठनों में काम करने वाले पेशेवरों के लिए कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करना।

3. सहकारी मॉडल में अनुसंधान और नवाचार

- o स्थायी सहकारी व्यवसाय मॉडल, माइक्रोफाइनेंस और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन पर अध्ययन करना।
- o सहकारी उद्यमों को ब्लॉकचेन आधारित आपूर्ति श्रृंखला, AI-संचालित मूल्य निर्धारण मॉडल और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म अपनाने में सहायता करना।

4. नीति विकास और वकालत

- o सहकारी क्षेत्र सुधारों के लिए राज्य और केंद्र सरकारों को नीति सिफारिशें प्रदान करना।
- o भारतीय सहकारिताओं को वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ संरेखित करने के लिए FAO, ICA और WTO जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना।

5. पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान का एकीकरण

- o पारंपरिक आर्थिक सिद्धांतों को आधुनिक सहकारी शासन के साथ मिश्रित करना।
- o सहकारी ढांचे के माध्यम से स्थायी कृषि, जैविक खेती और समुदाय-नेतृत्व वाले उद्यमों को बढ़ावा देना।

दीर्घकालिक दृष्टि और आर्थिक प्रभाव

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक में उल्लिखित अनुसार, 2047 तक विश्वविद्यालय का लक्ष्य है:

- सहकारी उद्यमों के माध्यम से भारत के सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में 50% योगदान देना।
- अगले 10 वर्षों में 5 लाख से अधिक सहकारी पेशेवरों को प्रशिक्षित करना।
- सहकारी व्यवसाय में सर्वोत्तम प्रथाओं पर 200+ शोध पत्र और केस स्टडी विकसित करना।
- घरेलू और वैश्विक बाजारों में भारतीय सहकारिताओं की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना।

निष्कर्ष

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय की स्थापना भारत के सहकारी क्षेत्र को पेशेवर बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। संरचित शिक्षा, कौशल विकास और अनुसंधान-संचालित समाधान प्रदान करके, विश्वविद्यालय सहकारी नेताओं की एक नई पीढ़ी बनाएगा जो नवाचार, स्थिरता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में सक्षम होगी। जैसे-जैसे भारत आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ता है, एक मजबूत सहकारी शिक्षा प्रणाली ग्रामीण और आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्तंभ होगी।

जादुई मंगलाजोड़ी- पक्षियों का स्वर्ग

- अनिंदिता गुहा, प्रबंधक, भुवनेश्वर शाखा द्वारा

मंगलाजोड़ी आर्द्रभूमि, जो ओडिशा के चिल्का झील के उत्तरी छोर पर स्थित है, प्रकृति का एक दुर्लभ दृश्य है। भुवनेश्वर से लगभग 70 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित, मंगलाजोड़ी वर्षों से लगभग 300 प्रजातियों के प्रवासी पक्षियों का आश्रय स्थल साबित हुआ है, जो सर्दियों के मौसम में मध्य एशियाई उड़ान मार्ग पर दूरदराज के देशों से आते हैं।

चिल्का झील भारत की सबसे बड़ी तटीय लैगून और दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी लैगून है, जो ओडिशा के तीन जिलों खुर्दा, पुरी और गंजाम में फैली हुई है और इसका क्षेत्रफल 1100 वर्ग किलोमीटर से अधिक है। इस खारे पानी की लैगून को 50 से अधिक नदियों और धाराओं का जल तथा सतपाड़ा से समुद्री जल प्रवेश पोषित करता है। यह आर्द्रभूमि उथले मीठे पानी, घास-फूस, सरकंडों, नालों, कीचड़ के टीलों, दलदली भूमि का संगम है और चिल्का झील से पूरी तरह अलग है।

वर्षों पहले, यह स्थान पक्षी शिकार के लिए कुख्यात था। ग्रामीण अपनी जीविका चलाने के लिए प्रवासी पक्षियों का शिकार करते थे। वर्षों के निरंतर और केंद्रित संरक्षणवादियों के प्रयासों से, इस स्थान ने उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाया है और पक्षियों के विश्राम स्थल और स्थानीय तथा प्रवासी पक्षियों के संरक्षण स्थल में बदल गया है। आज मंगलाजोड़ी एक प्राकृतिक पर्यटन स्थल और हर पक्षी प्रेमी का स्वर्ग है। ये आर्द्रभूमियां अब विभिन्न प्रकार के स्थानीय पक्षियों का घर बन गई हैं, जो पहले प्रवास के दौरान यहां आते थे, लेकिन बड़े शांत हरे दलदली क्षेत्रों और निचली भूमि के नालों के आवास और भोजन के लिए ताजे और समुद्री जीवन की प्रचुरता के कारण यहीं रह गए। फिरनी और समुद्री चिड़ियों के लिए आर्द्रभूमि में फैले अनगिनत दलदली क्षेत्र, जैसे फिरोजे हार पर पन्ने की तरह, घोंसले बनाने के लिए मैदान प्रदान करते हैं। आवास का जटिल ताना-बाना पक्षी जीवन की विस्तृत विविधता का अग्रदूत है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन पक्षियों को ईश्वर द्वारा प्रदान की गई प्राकृतिक नेविगेशन प्रणाली को समझना एक आश्चर्य है, जो बिना किसी तकनीकी सुविधा की मदद से साइबेरिया, मंगोलिया और उत्तरी आर्कटिक चक्र से भारत तक अपने सटीक गंतव्य तक पहुंचते हैं।

जनवरी 2025 में इस प्रकृति के अद्भुत स्थल की मेरी यात्रा के दौरान, हंसों की कलरव, पिनटेल बत्तखों की हिलती-डुलती सीटियों, बगुलों की भूतिया आवाज़ों ने प्राकृतिक और मधुर संगीत की एक लय बनाई। यह प्राकृतिक सुंदरता रुडी शेलडक, सिट्रिन वॉकटेल, ब्लैक विंग्ड स्टिल्ट और ग्रे हेरोन्स की पुकारों से बने शोर के कोलाहल से गूंज रही थी। स्पॉट बिल्ड पेलिकन और ब्लैक विंग्ड स्टिल्ट के बड़े समूह को नजदीक से मिलते और किसी मुद्दे पर बातचीत करते देखने का अनुभव एक प्रकृति प्रेमी के लिए हमेशा के लिए याद रखी जाने वाली स्मृति है। दलदली हरी घास का जटिल जाल बगुलों और सफेद बगुलों के लिए वेडिंग स्टेशन बन जाना आंखों के लिए दावत है।

चिल्का में पक्षी देखना एक गहन गतिविधि है। एक पारंपरिक देशी नाव पर संकरे सरकंडों के बीच से फिसलते हुए पक्षियों और उनकी अनुकूली विशेषताओं

का नजदीकी दृश्य प्राप्त करें। स्थानीय गाइड अपने व्यापक ज्ञान और विशेषज्ञता के साथ सभी पक्षियों की प्रजातियों के बारे में बताएंगे, जो इस अद्भुत आवास को समझने में मदद करेंगे। पोषक तत्वों से भरपूर जल कीड़े, प्लवक और जलीय जानवरों को आकर्षित करते हैं, जो पक्षी जीवन के लिए प्रचुर भोजन सुनिश्चित करते हैं।

मंगलाजोड़ी सिर्फ एक आर्द्रभूमि नहीं है, बल्कि प्रकृति और मनुष्य के बीच सामंजस्य में रहने वाले बंधन का प्रमाणित उदाहरण है। जब कभी भी प्रकृति की गोद में पलायन करने की इच्छा हो, तो बस मंगलाजोड़ी - ओडिशा से प्रकृति की जादुई पुकार का जवाब दें और इस अद्भुत स्थल की गर्माहट में खुद को डुबो दें।

भारत में खाद्य अपशिष्ट: एक संकट जिस पर कार्रवाई की आवश्यकता है

- अंजलि बंसल द्वारा

भारत, जहां कृषि लाखों लोगों की आजीविका का आधार है, एक कठोर वास्तविकता का सामना करता है: दुनिया के सबसे बड़े खाद्य उत्पादकों में से एक होने के बावजूद, लाखों लोग हर रात भूखे पेट सोते हैं। यह विरोधाभास एक महत्वपूर्ण मुद्दे को उजागर करता है—खेतों, बाजारों और घरों में खाद्य पदार्थों की एक आश्चर्यजनक मात्रा बर्बाद हो जाती है। खाद्य अपशिष्ट केवल एक आर्थिक नुकसान नहीं है, बल्कि एक मानवीय और पर्यावरणीय संकट भी है। किसान बिना बिके उत्पादों के साथ संघर्ष करते हैं, आपूर्ति श्रृंखला की अक्षमताओं के कारण खराब होते हैं, और उपभोक्ता प्रभाव को महसूस किए बिना खाने योग्य भोजन को फेंक देते हैं। इस मुद्दे का समाधान खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, किसानों का समर्थन करने और पर्यावरणीय नुकसान को कम करने के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत में खाद्य अपशिष्ट की वास्तविकता

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार, भारत सालाना **74 मिलियन टन** खाद्य पदार्थ फेंकता है, जिससे **₹92,000 करोड़** का वित्तीय नुकसान होता है।

यह विशाल अपशिष्ट भूख, आर्थिक अस्थिरता और पर्यावरणीय क्षति में योगदान देता है।

खाद्य अपशिष्ट के पीछे प्रमुख कारण

भारत में खाद्य अपशिष्ट को कई परस्पर जुड़े कारक प्रेरित करते हैं:

- **अपर्याप्त भंडारण सुविधाएं** – कई किसानों के पास उचित गोदामों और कोल्ड स्टोरेज तक पहुंच नहीं है, जिससे ताजा उत्पाद नष्ट हो जाते हैं।
- **बाजार अक्षमताएं** – मांग में उतार-चढ़ाव और खरीद में

देरी अक्सर किसानों को अतिरिक्त अबिके स्टॉक के साथ छोड़ देती है।

- **आपूर्ति श्रृंखला में अंतराल** – कमजोर परिवहन नेटवर्क और अक्षम हैंडलिंग के कारण भोजन उपभोक्ताओं तक पहुंचने से पहले ही नष्ट हो जाता है।
- **उपभोक्ता व्यवहार** – जागरूकता की कमी, अधिक परोसना और अनुचित खाद्य प्रबंधन के परिणामस्वरूप घरों और रेस्तरां में महत्वपूर्ण अपशिष्ट होता है।

खाद्य अपशिष्ट का प्रभाव

- **आर्थिक नुकसान** – किसान, खुदरा विक्रेता और व्यवसाय वित्तीय झटके का सामना करते हैं, जिससे कृषि लाभप्रदता कम हो जाती है।
- **खाद्य असुरक्षा** – बर्बाद भोजन भूख और कुपोषण से जूझ रहे लाखों लोगों को खिला सकता था।
- **पर्यावरणीय क्षति** – सड़ता हुआ भोजन मीथेन गैस छोड़ता है, जो जलवायु परिवर्तन में योगदान देती है।

खाद्य अपशिष्ट को कम करने में नेफेड की भूमिका

भारत के कृषि क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में, नाफेड आवश्यक वस्तुओं की खरीद, भंडारण और कुशल वितरण के माध्यम से खाद्य अपशिष्ट को कम करने के लिए सक्रिय रूप से काम करता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर अपनी खरीद के माध्यम से, नाफेड किसानों को संकट में बिक्री से रोकता है और यह सुनिश्चित करता है कि बाजार में उतार-चढ़ाव के कारण उनका उत्पादन बर्बाद न हो। महासंघ उन्नत भंडारण सुविधाओं को भी बनाए रखता है, जिससे फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जाता है और वस्तुओं के लिए बेहतर शेल्फ लाइफ सुनिश्चित की जाती है। इसके अतिरिक्त, नाफेड मूल्य उतार-चढ़ाव के दौरान प्याज और टमाटर जैसी आवश्यक वस्तुओं को बेचकर बाजारों को स्थिर करता है, जिससे अनावश्यक जमाखोरी और खराब होने से रोका जाता है। अपने नाफेड बाजार खुदरा नेटवर्क का लाभ उठाकर, यह गुणवत्तापूर्ण खाद्य उत्पादों को कुशलतापूर्वक उपभोक्ताओं तक पहुंचाता है। खाद्य सुरक्षा और किसान कल्याण के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता के साथ, नाफेड भारत में एक अधिक टिकाऊ और अपशिष्ट-मुक्त खाद्य प्रणाली के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखता है।

अपशिष्ट-मुक्त भविष्य की ओर

खाद्य अपशिष्ट केवल एक आर्थिक नुकसान नहीं है—यह लाखों लोगों को खिलाने और हमारे किसानों का समर्थन करने का एक छूटा हुआ अवसर है। भंडारण में सुधार, आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने और जागरूक उपभोक्ता बनने से, हम अपशिष्ट को कम कर सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि भोजन उन तक पहुंचे जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। नाफेड इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें उचित मूल्यों पर फसलों की खरीद, भंडारण सुविधाओं का रखरखाव और अनावश्यक नुकसान को रोकने के लिए बाजारों को स्थिर करना शामिल है।

हर बर्बाद भोजन किसी जरूरतमंद से छीना गया भोजन है। आइए अपने भोजन का सम्मान करें, अपने किसानों का समर्थन करें और अपशिष्ट को कम करें। बुद्धिमानी से भंडारण करें, केवल वही खरीदें जिसकी आपको आवश्यकता है, और जब भी संभव हो साझा करें। छोटे कार्य बड़ा बदलाव ला सकते हैं क्योंकि हर अनाज का महत्व है!

रचनात्मक कैनवास

खंड - 3

- एम.के.रावत द्वारा

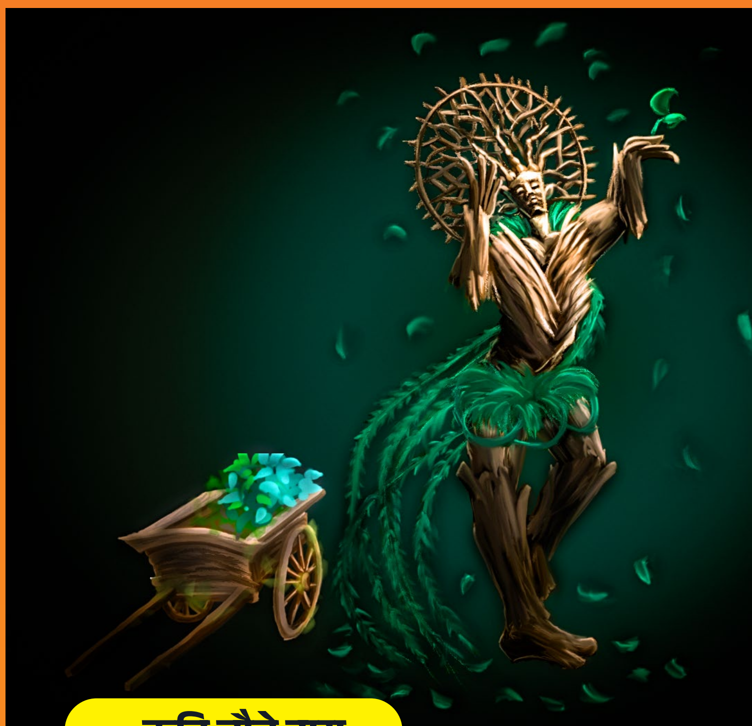

- कृति चौबे द्वारा

- अनीश चक्रवर्ती द्वारा

क्यूआर कोड स्कैन करें और हमारे सोशल मीडिया पर हमें फ़ॉलो करें

nafed
A Farmers' Cooperative
...Since 1958

भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ मर्यादित
नेफेड भवन, सिद्धार्थ एन्क्लेव आश्रम चौक, रिंग रोड, नई दिल्ली-110014
दूरभाष: इपीएबीएक्स: +91-11-26340019, 26341810
फैक्स: +91-11-26340261